

बीएचआई-102

बी०ए० प्रथम वर्ष

मध्यकालीन भारत का इतिहास

**इकाई चार- बहलोल लोदी, सिकन्दर लोदी, इब्राहिम लोदी एवं
सामाजिक स्थिति**

प्रस्तुतकर्ता

डॉ० एम०एम० जोशी

इतिहास विभाग, उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी

प्रस्तावना

सुल्तान फिरोज़ शाह तुगलक के शासनकाल के अंतिम वर्षों में जिस राजनीतिक अस्थिरता ने दिल्ली सल्तनत को जकड़ा था वह अगले साठ वर्षों से भी अधिक काल तक बनी रही। वास्तव में 1451 में बहलोल लोदी के सुल्तान बनने पर ही स्थिति में कुछ सुधार आया परन्तु राज्य को पुनर्संगठित करना और विरोधी शक्तियों का स्थायी रूप से दमन कर पाना लोदी शासकों की सामर्थ्य से परे था। राज्य के आर्थिक संसाधन भी सीमित थे। अफ़गान राजत्व के सिद्धान्त का अनुपालन करते हुए सुल्तान बहलोल ने स्वयं को राज्य संघ का प्रमुख माना न कि राज्य का सार्वभौमिक शासक। जौनपुर राज्य का दिल्ली सल्तनत में विलय बहलोल लोदी की सबसे बड़ी उपलब्धि थी। बहलोल लोदी की मृत्यु के बाद सुल्तान सिकन्दर लोदी ने सुल्तान को सर्वोपरि स्थान देकर राजत्व के सिद्धान्त में परिवर्तन किया और अमीरों की शक्ति को नियन्त्रित किया। सिकन्दर लोदी की साम्राज्य विस्तार की नीति एक सीमा तक सफल रही किन्तु उसके शासनकाल में सुल्तान-अमीर सम्बन्धों में कटुता आ गई। सिकन्दर लोदी की धर्मांधता ने हिन्दू-मुस्लिम वैमनस्य को बढ़ावा दिया। सिकन्दर लोदी की मृत्यु के बाद सिंहासनारूढ़ इब्राहीम लोदी अपने दम्भ और असहिष्णुता के कारण एक असफल शासक सिद्ध हुआ। सीमा सुरक्षा का समुचित प्रबन्ध न कर पाना और अपने विरुद्ध पनप रहे षडयन्त्रों के प्रति असावधान रहने के कारण पानीपत के प्रथम युद्ध में बाबर से पराजित होने पर उसका अन्त हुआ।

उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के उपरांत आप अग्रांकित के विषय में जानकारी प्राप्त कर सकेंगे-

- 1- अफ़गान राजत्व का सिद्धान्त, बहलोल लोदी द्वारा राज्य की अराजकतापूर्ण स्थिति में सुधार।
- 2- सिकन्दर लोदी के सैनिक अभियान तथा उसकी कट्टर धार्मिक नीति।
3. इब्राहीम लोदी की दोषपूर्ण नीतियां तथा पानीपत के प्रथम युद्ध में बाबर की विजय के उपरान्त भारत में मुगल साम्राज्य की स्थापना।
4. दिल्ली सल्तनत काल की सामाजिक स्थिति।

अफ़गान राजत्व का सिद्धान्त

बहलोल अफ़गान जाति का था। अफ़गानों की कबाइली राजनीतिक अवधारणा में विश्वास करता था। शासक की पूर्ण सम्प्रभुता और उसकी निरंकुश शक्ति में अफ़गानों की आस्था नहीं थी। उनका विश्वास शासक अथवा मुखिया के चुनाव में था न कि राजत्व के दैविक सिद्धान्त और वंशानुगत शासन की अवधारणा में। अपनी कबाइली संस्कृति में विश्वास रखते हुए अफ़गानों के विभिन्न कबीले, शासक को अपनी बिरादरी का मुखिया मानते थे न कि अपना स्वामी। बलबन, अलाउद्दीन खिलजी और मुहम्मद तुगलक के राजत्व के दैविक सिद्धान्त के विपरीत, सुल्तान बहलोल लोदी अफ़गानों के कबाइली और कुनबे की राजनीतिक अवधारणा में विश्वास करता था। बहलोल ने कभी भी एक स्वेच्छाचारी, निरंकुश एवं पूर्णसम्प्रभुता प्राप्त शासक की भांति व्यवहार नहीं किया। वह स्वयं को राज्य संघ का प्रमुख मात्र मानता था। उसने अपने पुरखों के स्थान रोह से अपने कबीले वालों को अपने राज्य में आने के लिए निमन्त्रित किया था। अपनी बिरादरी के अमीरों को उसने अपनी बराबरी का दर्जा दिया और सल्तनत में उनको अपना हिस्सेदार माना। उनके रूठने पर उनको मनाने के लिए उनके घर तक जाने में उसे कोई ऐतराज़ नहीं था और उनके साथ एक ही मसनद पर बैठने में उसे कोई संकोच नहीं था। उसने अपने राज्य के विभिन्न क्षेत्रों को अपने सम्बन्धियों और अपने अमीरों में बांटने का निर्णय लिया था।

बहलोल लोदी की उपलब्धियां

जौनपुर के शर्की राज्य पर विजय

जौनपुर के शर्की शासक दिल्ली सल्तनत के लिए सबसे बड़ा खतरा थे। सन् 1452, 1457, 1473, 1474 तथा 1479 में जौनपुर के सुल्तानों दिल्ली पर तथा दोआब पर अधिकार करने के लिए असफल सैनिक अभियान किए। जौनपुर के शासकों ने विद्रोही अमीरों का गुप्त समर्थन प्राप्त कर बहलोल के लिए दोआब में कठिनाइयां खड़ी कीं किन्तु उसने उनका भी सफलतापूर्वक सामना किया। दीर्घकालीन संघर्ष के बाद बहलोल सन् 1479 में जौनपुर पर निर्णायक विजय प्राप्त करने में सफल रहा।

विद्रोहियों का दमन

राज्य की राजनीतिक अस्थिरता का लाभ उठाकर मुल्तान, मेवात तथा दोआब के अमीरों तथा जागीरदारों ने न केवल बहलोल को राजस्व देना रोक दिया अपितु शर्की सुल्तानों से उसके विरुद्ध सांठगांठ करना भी प्रारम्भ कर दिया। बहलोल ने मेवात, सम्भल, कोल, साकित, इटावा, रापरी, भोगाँव, ग्वालियर आदि के विरुद्ध अभियान किए।

दिल्ली सल्तनत के सम्मान की पुनर्प्रतिष्ठा

बहलोल लोदी ने राज्य की आर्थिक स्थिति में सुधार किया। यद्यपि उसने अपने राज्य के लिए इस्लाम के सिद्धान्तों को आधार बनाया किन्तु बहुसंख्यक गैर-मुस्लिम प्रजा का उत्पीड़न करने में उसने कोई रुचि नहीं ली। अनेक हिन्दू शासक व जागीरदारों से उसके मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध थे। बहलोल लोदी ने साठ वर्ष से भी अधिक समय से चली आ रही राजनीतिक अस्थिरता को समाप्त कर साम्राज्य-विघटन की प्रक्रिया पर अंकुश लगाने में पर्याप्त सफलता प्राप्त की।

सुल्तान सिकन्दर लोदी

राज्यारोहण के समय की समस्याएं

1. निज़ाम खाँ 16 जुलाई, 1489 को सिकन्दर लोदी के रूप में दिल्ली का सुल्तान बना। बहलोल लोदी ने अपने पुत्र निज़ाम खाँ (सुल्तान बनने के बाद सिकन्दर लोदी) को पंजाब, दिल्ली और दोआब देकर अपना उत्तराधिकारी घोषित किया था किन्तु अपनी मृत्यु से पूर्व उसने अपने अन्य सम्बन्धियों तथा अमीरों में अपने शेष राज्य का बटवारा कर दिया था। उसने अपने पुत्र बरबक शाह को जौनपुर का राज्य, आलम खाँ को मानिकपुर, अपने भांजे काला पहाड़ को बहराइच और अपने पौत्र आज़म हुमायूँ को लखनऊ एवं कालपी तथा खान जहां लोदी को बदायूँ का क्षेत्र दिया था।
2. बहलोल की मृत्यु के बाद अमीरों का एक प्रभाशाली वर्ग निज़ाम खाँ के स्थान बरबक शाह यां आज़म हुमायूँ को सुल्तान बनाए जाने का पक्षधर था।
3. जौनपुर के अपदस्थ शर्की शासक हुसेन शाह ने जौनपुर के बागी अमीरों के सहयोग से उस पर पुनराधिकार का प्रयास किया।
4. बहलोल की उदारता के कारण राजकोष रिक्त हो गया था। ग्वालियर तथा बयाना आदि ने खिराज देना बन्द कर दिया था।

सुल्तान सिकन्दर लोदी

समस्याओं का निराकरण

1. राज्य के बटवारे को समाप्त करना

सुल्तान बनते ही सिकन्दर लोदी ने अपने विरोधियों के दमन हेतु आवश्यक कदम उठाए। उसने अपने भाई आलम खाँ को अपनी ओर मिलाया तथा अपने भतीजे आजम हुमायूँ व चाचा ईसा खाँ को पराजित किया। बरबक शाह को अनेक बार पराजित और क्षमा प्रदान करने के बाद उसने उसे अपदस्थ कर जौनपुर अपने अधिकार में कर लिया।

2. हुसेन शाह शर्की का दमन

. जौनपुर के अपदस्थ शर्की शासक हुसेन शाह को सिकन्दर लोदी ने पराजित किया। हुसेन शाह बंगाल चला गया। कुछ वर्षों के अन्तराल के बाद हुसेन शाह ने फिर सर उठाया किन्तु सन् 1494 में सिकन्दर ने एक बार फिर हुसेन शाह को पराजित किया।

3. अमीरों पर नियन्त्रण तथा राजत्व के सिद्धान्त में बदलाव

सिकन्दर लोदी के अमीर उसको अपना स्वामी नहीं, अपितु अपना मुखिया मात्र मानते थे। उसके अनेक अमीर उसके स्थान पर बरबक शाह अथवा आजम हुमायूँ को सुल्तान बनाना चाहते थे। सिकन्दर ने बहलोल द्वारा पोषित राजत्व के सिद्धान्त में बदलाव कर सुल्तान पद की गरिमा को बढ़ाया और अमीरों के महत्व को कम किया। सुल्तान ने अपने अमीरों को अपने साथ एक ही मसनद पर बिठाने के स्थान पर उन्हें अपने सामने खड़े रहकर सम्मान प्रदर्शित करने के लिए विवश किया। अमीरों को सुल्तान के आदेश को पैदल चलकर ग्रहण करने के लिए बाध्य किया गया। अनुशासनहीन एवं भ्रष्ट अमीरों को उसने दण्डित किया और उनकी गतिविधियों पर दृष्टि रखने के लिए गुप्तचर नियुक्त किए।

सुल्तान सिकन्दर लोदी

साम्राज्य विस्तार

1. हुसेनशाह शर्की ने बिहार में रहकर जौनपुर पर पुनराधिकार करने के लिए सन् 1494 में आक्रमण किया किन्तु सिकन्दर लोदी ने उसे पराजित किया और उसका पीछा करते हुए वह पटना जा पहुंचा। वहां उसने बिहार को अपने अधिकार में किया। इसी अभियान के दौरान उसने तिरहुत के शासक को भी अपनी आधीनता स्वीकार करने के लिए बाध्य किया।
2. सन् 1502 में सिकंदर ने धौलपुर के शासक विनायक देव को पराजित कर धौलपुर अपने राज्य में मिला लिया। ग्वालियर के राजा मानसिंह तोमर पर उसने कई आक्रमण किए परन्तु वह ग्वालियर पर अधिकार करने में असफल रहा। उसने ग्वालियर राज्य के नरवर, मन्दर तथा उतगिर पर अधिकार करने में अवश्य सफलता प्राप्त की।
3. राजपूत राज्यों पर नियन्त्रण रखने के लिए उसने बयाना पर अधिकार किया और उसके एक अंग आगरा को अपनी राजधानी के रूप में विकसित किया। सन् 1509 में सिकन्दर ने नागौर के शासक मुहम्मद खाँ को अपनी आधीनता स्वीकार करने के लिए बाध्य किया। सन् 1513 में चन्देरी भी उसके अधिकार में आ गया।

सुल्तान सिकन्दर लोदी

धार्मिक नीति

सिकन्दर लोदी यद्यपि विवाह से पूर्व हिन्दू रही माँ का पुत्र था, उसने एक हिन्दू कन्या से विवाह भी किया था किन्तु उसने स्वयं को इस्लाम के संरक्षक के रूप में प्रस्तुत किया। बहुसंख्यक गैर-मुस्लिम प्रजा के साथ उसने दमन की नीति अपनाई। नरवर, उतगिर तथा मन्दर पर अधिकार करने के बाद उसने मन्दिों को ध्वस्त करके उनके स्थान पर मस्जिदों का निर्माण कराया। नरवर के मन्दिरों की मूर्तियों को खण्डित कर उसने उनके टुकड़ों को बांट के रूप में प्रयुक्त करने के लिए कसाइयों में वितरित कर दिया। मथुरा में उसने भक्तों का पवित्र घाटों पर स्नान करना तथा मुण्डन कराना निषिद्ध कर दिया। बोधन नामक ब्राह्मण को उसने केवल इसलिए प्राणदण्ड दिया क्योंकि वह अपने धर्म और इस्लाम में एक ही सत्य का वास मानता था। सूफियों की उदार परम्पराओं पर भी उसने प्रतिबन्ध लगाया। मुहर्रम के समय ताज़ियों को निकालने और स्त्रियों के पीरों-फ़कीरों की मज़ार पर जाने पर उसने प्रतिबन्ध लगा दिया। जनश्रुति के अनुसार सन्त कबीर से भी उनकी नीतियों को लेकर उसका वाद-विवाद हुआ था। सुल्तान सिकन्दर लोदी की असहिष्णु धार्मिक नीति ने न केवल हिन्दू-मुस्लिम सम्बन्ध में कटुता को बढ़ावा दिया अपितु राजपूत शासकों को मुस्लिम सत्ता के विरुद्ध संगठित होने के लिए प्रेरित भी किया।

सुल्तान इब्राहीम लोदी

अमीरों से टकराव

सन् 1517 में जब इब्राहीम लोदी दिल्ली का सुल्तान बना तब इब्राहीम लोदी के छोटे भाई जलाल खाँ समर्थक दल ने उस पर राज्य के विभाजन के लिए दबाव डाला और जलाल खाँ को जौनपुर का स्वतन्त्र शासक बनवाने में सफलता प्राप्त की। जलाल खाँ के विद्रोह से लेकर उसके पतन, कारावास तथा हत्या के दौरान इब्राहीम लोदी को आजम हुमायं सरवानी तथा मलिक आदम की सक्रिय भूमिका से निपटना पड़ा। इब्राहीम लोदी इस निष्कर्ष पर पहुंचा कि सुल्तान के पद की पुनर्प्रतिष्ठा हेतु उसे अफगानों के कबाइली मूल्यों पर आधारित राजत्व के सिद्धान्त के स्थान पर तुर्कों द्वारा पोषित राजत्व के दैविक सिद्धान्त को स्थापित करना होगा। सुल्तान की निरंकुश, स्वेच्छाचारी शक्ति के पोषण की नीति स्वाभिमानी तथा स्वतन्त्रताप्रिय अफगान अमीरों के लिए अपमानजनक था। जलाल खाँ के विद्रोह के बाद सुल्तान अमीरों के प्रति सशंकित हो गया था। उसने पुराने अमीरों के स्थान पर अपने विश्वस्तों व वफादारों को अमीर बनाया और अपने विरोधी अमीरों का दमन किया। उसने अमीर मियाँ भोजा, आजम हुमायं सरवानी तथा उसके पुत्र फतेह खाँ कैद कर लिया। आजम हुमायं के एक अन्य पुत्र इस्लाम खाँ ने आगरा पर आक्रमण कर दिया। विद्रोही सेना तथा सुल्तान की सेना में भयंकर युद्ध हुआ जिसमें सुल्तान की जीत हुई। सुल्तान को विद्रोह का दमन करने की भारी कीमत चुकानी पड़ी। योग्यतम अफगान सैनिक इस गृह युद्ध में मारे गए। सुल्तान के विरुद्ध बिहार के सबेदार दरिया खाँ नहानी, उसके पुत्र महम्मद शाह तथा खानेजहां लोदी ने विद्रोह किए। सुल्तान ने चन्देरी के सबेदार शेखहसन करमली की हत्या करवा दी। अपने पुत्र दिलावर खाँ को सुल्तान द्वारा दिल्ली में धमकाए जाने के कारण पंजाब का सबेदार दौलत खाँ लोदी नाराज हो गया और उसने मुगल बादशाह बाबर को सुल्तान पर आक्रमण करने के लिए निमन्त्रित किया। इब्राहीम लोदी ने अमीरों के दमन के प्रयास में खुद को अकेला और असुरक्षित कर दिया।

पानीपत का प्रथम युद्ध तथा दिल्ली सल्तनत का पतन

बाबर ने 1504 में काबुल पर अधिकार कर लिया था। सन् 1519 में उसने भारत पर पहला सैनिक अभियान किया था। 1524 में उसने सुल्तान के चाचा आलम खाँ लोदी तथा पंजाब के सूबेदार दौलत खाँ लोदी के निमन्त्रण पर पंजाब पर आक्रमण कर बहार खाँ लोदी के नेतृत्व में शाही सेना को परास्त किया और लाहौर व दीपलपुर पर अधिकार कर लिया। सन् 1525 में पंजाब पर पूर्ण अधिकार कर बाबर ने दिल्ली की ओर कूच किया। अपने अधिकांश अमीरों का अब तक समर्थन खो चुका इब्राहीम लोदी उसका मुकाबला करने के लिए पानीपत पहुंचा। 21 अप्रैल, 1526 को दोनों सेनाओं के मध्य युद्ध हुआ। बाबर की सेना से संख्या में अधिक होते हुए भी इब्राहीम लोदी की सेना, बाबर के कुशल सेनानायकत्व व तुलुगमा (तोपखाने तथा घुड़सवार सेना का अप्रत्याशित संयुक्त आक्रमण) रणनीति के समक्ष पराजित हुई। इब्राहीम लोदी लड़ते हुए मारा गया। इस निर्णायक युद्ध में विजय प्राप्त करने के बाद बाबर ने भारत में मुगल साम्राज्य की नींव डाली।

सल्तनत काल में सामाजिक स्थिति

हिन्दुओं तथा अन्य गैर-मुस्लिम समुदायों की जीवन शैली

दिल्ली सल्तनत काल में हिन्दुओं तथा अन्य गैर-मुस्लिम समुदायों के सामाजिक जीवन में कोई उल्लेखनीय बदलाव नहीं आया। वर्ण-व्यवस्था जन्मनाजाति की अवधारणा पर आधारित रही और सामाजिक असमानता को धार्मिक समर्थन भी प्राप्त रहा। ब्राह्मणों एवं क्षत्रियों का सामाजिक प्रभुत्व पूर्ववत् स्थापित रहा। धनाढ्य वैश्य समुदाय साधन-सम्पन्न होते हुए भी सम्मान का पात्र नहीं बन पाया। शूद्रों की स्थिति पहले की भांति दयनीय रही। सामाजिक जीवन में धर्म की प्रधानता रही परन्तु धर्म के नाम पर कर्मकाण्ड और आस्था के नाम पर अंधविश्वास का बोलबाला रहा। धनाढ्यों एवं निर्धनों के खानपान में बहुत अन्तर था। जहां गरीब के लिए भरपेट भोजन के नाम पर दाल-रोटी पर्याप्त होती थी वहां समृद्ध वर्ग छप्पन भोग का आनन्द उठाता था। ब्राह्मण तथा वैश्य मुख्यतः शाकाहारी थे और क्षत्रियों व शूद्रों के मध्य मांसाहार प्रचलित था। इस काल के आभिजात्य वर्ग में सुरा का सेवन प्रचलित था। ग्रामों में पंचायतों, चौपाल और पनघट का सामुदायिक जीवन में बहुत अधिक महत्व था। ग्रामीणों की भेषभूषा बहुत साधारण होती थी, उनमें सिले हुए कपड़ों का चलन कम था। जूते पहनना उनके मध्य अपवाद था। शहरी जीवन में भौतिकतावादी सुखों के प्रति अधिक रुझान था। शहरों में अमीर-गरीब के मध्य खाई और अधिक चौड़ी थी।

सल्तनत काल में सामाजिक स्थिति

मुसलमानों की जीवन शैली

मुस्लिम समाज में जन्मनाजाति की अन्यायपूर्ण सामाजिक व्यवस्था का चलन नहीं था किन्तु अमीर-गरीब, मालिक-गुलाम, शहरी-ग्रामीण आदि के मध्य गहरी खाई अवश्य थी। मुसलमानों में भी धर्म की महत्ता बहुत अधिक थी। उलेमा वर्ग का समाज में सम्मानपूर्ण स्थान था। मुसलमानों में जादू-टोटके, गण्डा, ताबीज़, जिन्न, परी, मन्नत, नज़र लगना आदि अंधविश्वास व्याप्त थे। मुसलमानों में मांसाहार का चलन था। आभिजात्य वर्ग के खानपान में बहुत अधिक विविधता थी और मदिरापान एक आम बात थी। मुसलमानों में अचकन, शेरवानी, कुर्ता, चूड़ीदार पाजामा, शरारा, गरारा, सलवार, कमीज़, लहंगा आदि पहनावों का चलन था। गांवों में बसे मुसलमान और हिन्दू के रहन सहन में कोई अन्तर खोज पाना कठिन था किन्तु शहरों में आभिजात्य मुस्लिम वर्ग अन्य समुदायों के सभ्य समाज की तुलना में अधिक विलासिता की जीवन व्यतीत करता था।

सल्तनत काल में सामाजिक स्थिति

स्त्रियों की दशा

हिन्दू समाज में सती प्रथा, विधवा-विवाह निषेध, दहेज की प्रथा, स्त्री की आर्थिक पराधीनता, स्त्री-शिक्षा पर प्रतिबन्ध आदि के कारण स्त्रियों का जीवन अभिशप्त था। मुस्लिम समाज में भी स्त्री शोषण और दमन का शिकार थी। इस्लाम में पुरुषों के लिए चार विवाह तक जायज़ होने के कारण लाखों मुस्लिम स्त्रियों को बहुपत्नीवाद की त्रासदी से गुज़रना पड़ता था। अन्य समुदायों में भी पुरुषों में बहु विवाह का प्रचलन था, किन्तु मुसलमानों की तुलना में यह कम था। पर्दा प्रथा के कारण मुस्लिम स्त्रियों को आमतौर पर घर की चहारदीवारी में कैद रहकर ही अपना सारा जीवन बिताना पड़ता था। मुस्लिम प्रभाव से अन्य समुदायों में स्त्रियों को पर्दे में रखने का चलन हो गया था। सभी समुदायों की स्त्रियां आभूषणों के प्रति अनुरक्त थीं और अपने परिवार की आर्थिक स्थिति के अनुरूप उन्हें बनवाती थीं। स्त्री-शिक्षा का चलन एक अपवाद होने के कारण स्त्री समाज में अंधविश्वासों का व्यापक प्रसार था। कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि इस काल में स्त्रियों की दशा सामान्यतः शोचनीय तथा दयनीय थी।

सलतनत काल में सामाजिक स्थिति

हिन्दू-मुस्लिम सम्बन्ध

इस काल में हिन्दू-मुस्लिम सम्बन्ध धूप-छांव की तरह रहे। दोनों समुदायों में वैमनस्य रहा। हिन्दुओं के लिए मुसलमान म्लेच्छ थे तो मुसलमानों के लिए हर गैर-मुस्लिम काफ़िर था। मुसलमान मूर्तिभंजक थे तो हिन्दू मूर्तिपूजक। दोनों के आचार-विचार, खान-पान, वेशभूषा, भाषा आदि सभी में अन्तर था। इसी कारण दोनों समुदायों के मध्य एक तनावपूर्ण और कटुतापूर्ण वातावरण रहता था किन्तु समय के साथ-साथ दोनों समुदायों को एक-दूसरे को समझने का अवसर मिला। सूफ़ी फ़कीरों और भक्त सन्तों ने दोनों को आपस में मिलजुल कर रहने का उपदेश दिया। जहां मुस्लिम संस्कृति ने भारत की प्राचीन संस्कृति को प्रभावित कर उसमें बदलाव किया वहीं भारतीय संस्कृति ने भी मुसलमानों के जीवन और उनके विचारों को प्रभावित किया। दो महान किन्तु भिन्न-भिन्न समुदायों की संस्कृतियों के संगम से भारत में गंगा-जमुनी संस्कृति अथवा तहज़ीब का विकास हुआ।

सारांश

1451 में बहलोल लोदी के सुल्तान बनने पर पिछले साठ वर्षों से व्याप्त राजनीतिक अराजकता में कुछ सुधार आया। बहलोल लोदी अफगान राजत्व के सिद्धान्त में विश्वास रखते हुए स्वयं को अपने अमीरों का मुखिया मानता था, उनका स्वामी नहीं। जौनपुर राज्य का दिल्ली सल्तनत में विलय बहलोल लोदी की सबसे बड़ी उपलब्धि थी किन्तु प्रशासनिक सुधार के क्षेत्र में उसकी कोई उल्लेखनीय उपलब्धि नहीं है।

बहलोल लोदी की मृत्यु के बाद सुल्तान सिकन्दर लोदी ने अपने पिता द्वारा राज्य के विभाजन के निर्णय को अस्वीकार कर दिया। एकछत्र शासक बनने के लिए उसने सुल्तान के पद की गरिमा को बढ़ाया अमीरों की शक्ति तथा उनकी महत्वाकांक्षाओं को नियन्त्रित किया। सिकन्दर लोदी की साम्राज्य विस्तार की नीति सफल रही किन्तु उसके शासनकाल में सुल्तान-अमीर सम्बन्धों में कटुता आ गई। उसकी धर्मांधता ने हिन्दू-मुस्लिम वैमनस्य को बढ़ावा दिया।

सिकन्दर लोदी की मृत्यु के बाद सिंहासनारूढ़ इब्राहीम लोदी अपने दम्भ और असहिष्णुता के कारण एक असफल शासक सिद्ध हुआ। वह न तो सीमा सुरक्षा का समचित प्रबन्ध कर सका और न ही अपने विरुद्ध पनप रहे षडयन्त्रों के प्रति सावधान रहा। पानीपत के प्रथम युद्ध में बाबर से पराजित होने पर उसका तथा उसके राज्यवंश का अन्त हुआ।

दिल्ली सल्तनत काल में असमानता, सामुदायिक वैमनस्य, रूढ़िवादिता, अंधविश्वास, दलितों तथा स्त्रियों का शोषण आदि सामाजिक पतन के लिए उत्तरदायी थे। धर्म के नाम पर कर्म काण्ड का बोलबाला था। इस काल का ग्राम्य जीवन सादगी पूर्ण और आभिजात्य वर्ग के शहरियों का जीवन विलासितापूर्ण था। इस काल में स्त्रियों की दशा सामान्यतः शोचनीय थी। इस काल में हिन्दू-मुस्लिम सम्बन्धों में आमतौर पर वैमनस्य बना रहा किन्तु दोनों समुदायों के मध्य सांस्कृतिक आदान-प्रदान हुआ और इसके परिणाम स्वरूप भारत में गंगा-जमुनी सभ्यता का विकास हुआ।